02 जुलाई 2023, जुलाई (प्रथम) • कुल पृष्ठ : 8 • मूल्य : 2/- • वर्ष : 46 • अंक : 7

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**

सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

सह-सम्पादक : **पीयूष जैन**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आर. एन. आई. 31109/77

JaipurCity / 224 / 2021-23

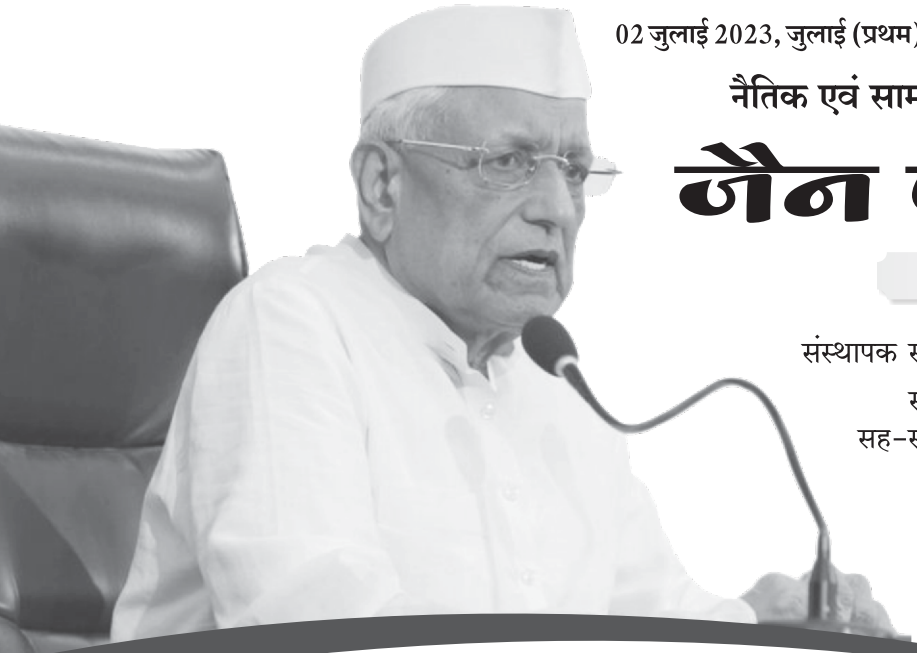

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में...

धर्मनगरी महरौनी में सम्पन्न हुआ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

महरौनी : तीर्थंकर भगवान महावीर के शासनकाल में, आचार्य कुन्दकुन्ददेव की शुद्ध आम्नाओं में, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में, ज्ञानतीर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में उत्तरप्रदेश की धर्मनगरी ललितपुर के महरौनी नगर में 19 से 23 जून तक जैनधर्म का सर्वोत्कृष्ट महोत्सव श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव विविध अनुष्ठानों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस महामहोत्सव की सफलता में प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनंदनकुमार शास्त्री, खनियांधाना; पण्डित बिपिन शास्त्री, मुंबई; श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर का योगदान उल्लेखनीय है।

विद्वत्वर्ग में पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर; पण्डित राजकुमार शास्त्री, उदयपुर; डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ; पण्डित संजय शास्त्री, जेवर; पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर; डॉ. विवेक शास्त्री, इंदौर; पण्डित प्रयंक शास्त्री, रहली आदि का लाभ मिला। श्री ऋषभ शास्त्री, छिंदवाड़ा; डॉ. अंकित शास्त्री, लूणदा; ब्र. मनोज जैन, जबलपुर; श्री देवेन्द्र जैन, ग्वालियर; श्री सुनील धवल, भोपाल; पण्डित श्रेयांस शास्त्री, अभाना; श्री दीपकराज जैन, छिंदवाड़ा का भी महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा।

पंच-दिवसीय महोत्सव के विशेष आकर्षण में श्री जिनेन्द्र शोभायात्रा, इन्द्रसभा, राजसभा, अष्टदेवियों की सुंदर प्रस्तुति, माता के सोलह स्वप्न, जन्मकल्याणक का पालना-झूलन, मुनिराज का आहारदान, मनोहारी समवशरण एवं दिव्यध्वनि प्रसारण, पंचकल्याणक विषय पर विद्वत संगोष्ठी, डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर का इन भावों का फल क्या होगा विषय पर विशेष सेमिनार व श्री संजीव जैन, उस्मानपुर की आध्यात्मिक भजन संध्या के दृश्य अविस्मरणीय हैं।

यह पुनीत कार्य श्रीमती कुसुम जैन ध.प. स्व. श्री विमलकुमार जैन, सुपुत्र श्री रजनीश जैन, श्री नीरज जैन 'नीरू केमिकल्स' दिल्ली; श्री प्रेमचन्द्र बजाज, कोटा; श्रीमती कुसुम-प्रदीप चौधरी, किशनगढ़; श्री कुन्दकुन्द पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई; श्रीमती कुसुम-महेन्द्र गंगवाल, जयपुर; डॉ. बासंती बेन, मुम्बई; श्री मुकेश जैन 'जैना ज्वेलर्स' ग्वालियर; पण्डित सुनील शास्त्री मुरार, ग्वालियर एवं क्षेत्रीय मुमुक्षु मण्डलों के सहयोग से ही सम्पन्न हो सका है।

इस मंगल महोत्सव के सौभाग्यशाली पात्रों में सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी के रूप में श्री धन्यकुमार-नीलम पवैया, महरौनी; कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी के रूप में श्री निखलेश-संगीता सिंघई, महरौनी; माता-पिता के रूप में श्रीमती सरोज-कैलाशचंद्र चौधरी, महरौनी एवं यज्ञनायक-नायिका के रूप में श्री कपूरचंद्र-मुन्नी भायजी, महरौनी रहे।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री प्रदीप चौधरी, कार्याध्यक्ष श्री मुन्नालाल जैन, मंत्री श्री आलोक वैद्य एवं श्री धन्यकुमार पवैया; सहमंत्री श्री रविन्द्र जैन, श्री आनन्द चौधरी व श्री रोहित वैशाखिया; कोषाध्यक्ष श्री गुलाबचंद्र जैन; संयोजक श्री संजय जैन, डॉ. विकास शास्त्री, श्री राजीव चौधरी व श्री अमित अरिहंत; कार्यालय प्रभारी पण्डित कमलेश शास्त्री थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम युवा विद्वान पण्डित आशीष शास्त्री, टीकमगढ़ के कुशल निर्देशकत्व में सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि इस सुंदर एवं मनोहारी जिनालय का निर्माण श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, महरौनी के अध्यक्ष श्री कपूरचंद्र भायजी, उपाध्यक्ष श्री सुरेशचंद्र मैगुवा, मंत्री श्री कैलाशचंद्र चौधरी, संयुक्तमंत्री श्री राजकुमार सिंघई, कोषाध्यक्ष श्री धन्यकुमार पवैया, ऑडीटर श्री अखिलेश चौधरी के अथक प्रयास और परिश्रम से सम्भव हो सका।

आइये जानें, क्या है प्रशिक्षण शिविर?

प्रशिक्षण शिविर एवं भावभासन परक और जीवनोपयोगी शिक्षण पद्धति

1

सम्पादक की कलम से...

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर
महामंत्री – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

प्रशिक्षण शिविर, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है, जो **दादा ने आज से लगभग 54 वर्ष पूर्व प्रारम्भ की थी।** प्रथम प्रशिक्षण शिविर सन् 1969 में टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आयोजित हुआ था और इस शृंखला का 55वाँ और अभी तक का अंतिम शिविर इस वर्ष (दादा के महाप्रयाण के बाद) मई-जून माह में ग्वालियर में अतिशय सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

जैनसमाज में शिविरों के प्रणयन का श्रेय पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को जाता है, जिनके मंगल सानिध्य में सोनगढ़ में प्रतिवर्ष श्रावण माह में शिक्षण शिविर लगने की परम्परा का प्रारम्भ हुआ। आज तो शिविर सम्पूर्ण समाज में एक व्यापक रूप धारण कर चुके हैं।

दादा (डॉ. भारिल्ल) ने शिविरों की महती उपयोगिता और उनके महत्त्व को पहिचाना और समाज को शिविरों के अनेक स्वरूप (formats) प्रदान किये। **यथा – प्रशिक्षण शिविर (धर्माध्यापकों के लिए) प्रवचनकार प्रशिक्षण शिविर, प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर, ग्रुप शिविर (एक निश्चित इलाके के सैकड़ों गांवों में एक साथ लगने वाले 7 दिवसीय शिविर, जिनमें बालकों को जैनधर्म का प्राथमिक ज्ञान दिया जाता है) आदि-आदि।**

यूँ तो देशभर में प्रतिवर्ष हजारों शिविर होते हैं, पर **अध्यापकों को प्रशिक्षित करने वाला यह शिविर कई मायनों में विलक्षण है।** यथा-

- अपनी तरह का यह एकमात्र शिविर है, जो विशाल पैमाने पर लगातार 55 वर्षों से आयोजित हो रहा है। इसकी निरंतरता ही इन्हें अनोखा बनाती है।
- 18-20 दिन का यह शिविर अपनेआप में 3-3 पंचकल्याणकों के बराबर है, जिसमें 18-20 दिनों तक करीब 1500-2000 लोग एक साथ भाग लेते हैं।
- कोई व्यक्ति जो कार्य B. Ed. की ट्रेनिंग में, स्नातक स्तर (graduation) की परीक्षा पास करने के बाद 2 वर्ष में, प्रति प्रशिक्षणार्थी लाखों रूपये के व्यय से करता है, **वही कार्य हम मात्र 18 दिनों में सम्पन्न कर लेते हैं, जब 15 वर्ष से लेकर 90 वर्ष आयुवर्ग के स्त्री-पुरुषों को मनोवैज्ञानिक विधि से जैनधर्म पढ़ाने का प्रशिक्षण देकर हम उन्हें एक ऐसा शिक्षक बना देते हैं** जो अपने शहर, गॉव, गली, मुहल्ले या अपने घर के **बालकों को सरल, युक्तिसंगत, मनोवैज्ञानिक और रोचक शैली में उनके परिचित उदाहरणों के माध्यम से धार्मिक शिक्षण दे सकें, जहाँ बालकों को कुछ भी रटने की आवश्यकता न हो और वे धर्म के मर्म को समझ सकें और यह जान सकें कि हमारे धर्म के सिद्धांत और धार्मिक आचरण किसप्रकार हमें सुखी करने के साधन हैं। धर्म और धार्मिक आचरण बोझा और बंधन नहीं हैं, ये तो मुक्ति के मार्ग हैं।**

हमारी उक्त शिक्षण-प्रशिक्षण पद्धति की अवधारणा (concept) यह है कि **रटाया गया विषय ज्ञान नहीं है; क्योंकि वह हमारे जीवन में उपयोगी नहीं है। ज्ञान समझ का नाम है जो हमारे जीवन में कदम-कदम पर काम आता है, हमारी जीवनपद्धति को सरल और आनंददायक बनाता है।**

उदाहरण के लिए – हमें कभी यह रटने की जरूरत नहीं पड़ी कि प्यास लगे तो पानी पीना चाहिए और भूख लगे तो भोजन करना चाहिए या आग गर्म होती है, जलाती है और बर्फ ठंडा होता है।

क्यों?

क्योंकि हमें मालूम (भवभासन) तो है कि प्यास पानी से बुझती है और भूख भोजन से। जब मालूम है तो रटने की क्या आवश्यकता है? कोई कह सकता है कि बच्चे को समझाने के लिए तो भाषा चाहिए न!

अरे वह बच्चा जिसे भाषाज्ञान नहीं है, जो भूख और प्यास शब्दों से परिचित नहीं है और जो भोजन और पानी शब्द भी नहीं जानता है, उसे यह पक्का अहसास (समझ) होता है कि यह पीड़ा (भूंख और प्यास) इस वस्तु के इसप्रकार सेवन दे दूर होगी।

मैं कहना चाहता हूँ कि प्यास पानी से बुझती है, बच्चे को यह सिखाने के लिए न तो किसी स्कूल में भेजने की जरूरत है और न ही किसी उपदेश या भाषा की या रटबाने की; **बस एक बार दो घूँट पानी पिला दीजिये, वह जीवनभर नहीं भूलेगा कि पानी पीने से प्यास बुझती है और यह तथ्य वह बालक तब भी सीख जाता है, जब उसे भाषा आती ही नहीं है; न तो बोलना और न ही समझना।**

चार वर्ष के एक बालक को एक बार साथ ले जाकर स्कूल का रास्ता दिखला दीजिए, बस! अब उसे एड्रेस की जरूरत नहीं है, अगली बार उसे अकेला छोड़ दीजिये, वह स्कूल पहुँच जाएगा। हालांकि यदि कोई उससे पूंछे तो वह एड्रेस बतला नहीं सकता है। उसे यह भी नहीं मालूम कि रोड का नाम क्या है या स्कूल की दूरी कितने किलोमीटर या मीटर है। बस **इसी को भावभासन-परक (समझपूर्वक) शिक्षा कहते हैं; इसी प्रकार की शिक्षा जीवन में उपयोगी है।**

अगर आप अपने बच्चे को यह रटबा दें कि आग गर्म होती है एवं जला देती है और यह समझें कि वह ज्ञानी हो गया है तथा अब कभी जलेगा नहीं तो आप भ्रम में हैं। आपकी वह शिक्षा किसी काम की नहीं है। आपका वह बच्चा रटते हुए मुँह से बोलता रहेगा कि आग गर्म होती है, जला देती है और आपकी निगाह चूकते ही गैस की जलती हुई फ्लेम में अपना हाथ डाल देगा। यह ठीक वैसा ही व्यवहार है कि तोता बोलता जाता है कि – शिकारी आएगा, जाल

बिछायेगा, मुझे फँसायेगा और ले जाएगा और बोलते-बोलते ही स्वयं जाकर शिकारी के जाल में फंस जाता है; **क्योंकि उसे भावभासन (समझ) नहीं है कि शिकारी किसे कहते हैं, जाल कैसा होता है और फंसने का मतलब क्या है?**

मेरा बेटा अनेकांत जब छोटा था तो जब मैं उसे गोद में बिठाकर चाय पीता था तो मौक़ा पाते ही वह मेरे चाय के गरमागरम कप पर झपट पड़ता था, तब मैंने एक बार उसकी अंगुली को चाय के गर्म कप से हलके से छुआ दिया (भवभासन करवा दिया); बस उसके बाद उसने कभी चाय के कप पर झप्पटा नहीं मारा; हालांकि अभी वह यह नहीं बतला सकता था कि यह गर्म है और जलाता है। अब आप ही बतलाइये कि इसके अलावा और कौनसा उपदेश उस उम्र में उसे यह बात समझा सकता था?

एक बात और; **आप 1000 पेज का ग्रन्थ पढ़ाकर या 100 घंटे उपदेश देकर किसी को यह नहीं समझा सकते हैं कि नीबू का स्वाद कैसा होता है।** आप उसे रटबा सकते हैं कि नीबू का स्वाद खट्टा होता है। रटबाने के बाद उसे आप नीबू का रस चखबाइये और पूँछिये कि यह स्वाद कैसा है, तो वह यह नहीं बतला पायेगा कि ये खट्टा है या ये नीबू का रस है। **इसकी बजाय यदि आप किसी बच्चे को नीबू के रस की एक बूँद चखबाकर कहें कि यह नीबू का स्वाद है और इसे खट्टा कहते हैं। अब वह जीवनभर यह बात कभी नहीं भूलेगा।**

एक ऐसे बच्चे को जिसने न तो कभी हाथी देखा है और न ही चूहा, जो न तो यह जानता है कि किलोग्राम या ग्राम क्या होता है एवं मीटर और सेंटीमीटर क्या होता है, यदि यह रटबा दिया जाए कि हाथी का वजन लगभग 5,000 किलोग्राम और ऊँचाई लगभग 3 मीटर होती है तथा चूहे का बजन लगभग 300 ग्राम तथा लम्बाई लगभग 15 सेंटीमीटर होती है। तो क्या वह **''हाथी और चूहे की कल्पना कर पायेगा, क्या वह समझ पायेगा कि कौन कितना बड़ा या छोटा होता है? अब यदि उससे यह पूछा जाए कि हाथी पर चूहा चढ़ जाए तो क्या होगा और चूहे पर हाथी चढ़ जाएगा तो क्या होगा?'' तो क्या वह इसका सही उत्तर दे पायेगा?**

नहीं न? उसके लिए तो दोनों एक जैसे ही हैं। इसकी जगह यदि उसे दोनों दिखला दिए जाएँ तो वह तुरन्त सब कुछ जान-समझ जाएगा।

इसप्रकार हम पाते हैं कि **भाव समझे बिना कोरे किताबी ज्ञान और रटन्तविद्या का कोई महत्त्व और उपयोग नहीं है। हमें आवश्यकता है किसी वस्तु का सही भाव समझने (भावभासन करने) की। भावभासन ही उपयोगी है।**

हमारी धार्मिकशिक्षा के क्षेत्र में भी यही बात लागू होती है। धार्मिकशिक्षा की हमारी परंपरागत शैली में समझने-समझाने की जगह या तो रट लेने पर जोर है और या आज्ञा प्रधानी होने पर। बस आप रट लीजिये कि द्रव्य छह होते हैं और तत्त्व सात। चार कषाय, पांच पाप, छह सामान्य गुण, सात व्यसन, आठ कर्म, नौं नोकषाय, दश धर्म, चार गतियाँ और पांच इन्द्रियाँ आदि-आदि। इनके नाम भी रट लीजिये।

ये सब रट लेने मात्र से क्या आप ज्ञानी हो जाते हैं, ये सब रट लेना आपके किस काम का है? यह रटबाकर आज आप किसी को धर्म के मार्ग पर नहीं ला सकते हैं, उसे यह समझाना होगा कि इनके मायने क्या हैं और इनका जानना किसप्रकार हमारे हित में है।

आपको उपदेश या आज्ञा दी जाती है कि पानी छान कर पियो, रात्रि भोजन मत करो, अभक्ष्य-भक्षण मत करो, नित्य देव-दर्शन करो आदि-आदि। आपने यह सब कर लिया और आप हो गए धर्मात्मा!

अब आप ही बतलायें कि बिना कारण जाने-समझे यह सब करने से आपको आनंद मिलता है या यह सब आपको बोझा और बंधन जैसा लगता है?

उक्त प्रकार का आदेश देने के बजाय यदि आपको इनका अर्थ समझाया जाए, तो आप मजबूरी में नहीं, वरन् स्वेच्छा से ऐसा ही आचरण करना चाहेंगे और इसमें आपको संतुष्टी होगी।

पर समस्या यह है कि उक्त सभी क्रियाओं के मायने क्या हैं, स्वरूप क्या है, कारण और प्रयोजन क्या है; यह सब जानने-समझने या समझाने की जरूरत ही नहीं समझी जाती है। बस प्रवचन में आकर बैठ भर जाइये, आपका धर्म का मीटर चालू हो जाता है, आप अपने को धर्मात्मा मानने लगते हैं। स्वरूप सुनने, समझने, मानने या कुछ पालन करने की आवश्यकता ही नहीं समझी जाती।

पूजन कर रहे हैं तो ध्यान कहीं और है, देख कहीं रहे हैं, क्या बोल रहे हैं इसका विवेक नहीं है और हो गया धरम, बन गए हम धर्मात्मा। बस **यही कारण है कि लोग पीढ़ियों से यह सब करते आरहे हैं, हम स्वयं भी जीवनभर यही सब करते रहे हैं पर जैसे के तैसे हैं, जहाँ के तहाँ हैं। आत्मकल्याण के पथ पर एक कदम भी आगे नहीं बढे हैं।**

मेरे एक मित्र हैं, जिन्हें मंदिर जाना समय की बर्बादी लगता था. उनका कहना था कि घर पर ही भगवान की आराधना करने से आने-जाने का समय बच जाता है, इससे क्या फर्क पड़ता है कि मंदिर जाएँ या यही काम घर पर करलें?

उक्त बिषय पर उनकी अपने पिता से हमेशा ही बहस होती रहती थी, जो कि घर के वातावरण में कलुषता का कारण बनती थी।

एक बार जब मैं उनके घर पर गया तो पिता-पुत्र दोनों ने मिलकर अपनी यह समस्या मेरे सामने रखी और समाधान के लिए बड़ी ही आशा भरी नजरों से मेरी ओर ताकने लगे।

मैंने उन्हें क्या जबाब दिया, और उसका परिणाम क्या रहा, यह जानने के लिए पढ़ें इस लेखमाला की अगली कड़ी, अगले अंक में...

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

55वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

गतांक में प्रकाशित
इस अभूतपूर्व आयोजन पर देशभर से प्राप्त शुभकामनाओं
के कुछ अंश आगामी पृष्ठों पर और शेष आगामी अंक में...

अकल्पनीय सफलताओं के साथ

– सुशील सेठी, दिल्ली
(मुख्य संयोजक : श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर)

ग्वालियर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अकल्पनीय सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर की सफलता में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल की भूमिका विशेष सराहनीय रही। अपना पूरा समर्पण एवं पूरा समय दिया, साथ ही श्री पीयूषजी शास्त्री एवं स्मारक के समस्त स्तानकों का भी समर्पण देखने लायक था।

शिविर की सफलता में श्री मुकेशजी, पण्डित सुनीलजी शास्त्री, पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री एवं समस्त स्थानीय शास्त्री परिवार की सूझबूझ से समस्त व्यवस्थाएँ सुन्दरतम रही।

शिविर की मुख्य विशेषताएँ –

1) बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली; डॉ. मनीषजी, मेरठ; पण्डित संजयजी, जेवर आदि अनेक मनीषि विद्वानों के द्वारा तत्त्व की अमृतमयी वाणी का भरभूर लाभ।

2) चार सौ से अधिक प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षित हुये। जो गांव-गांव जाकर धर्म का प्रचार-प्रसार करेंगे।

3) अनेक नये भाई-बहिन मूल तत्त्वधारा से जुड़े।

अभूतपूर्व सफलता

– शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुम्बई

इस 55वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में दादा अनुपस्थित रहकर भी जन-जन में समा गए हैं। दादा जैसी जिम्मेदारी, कर्तव्यपरायणता हर कार्यकर्ता में दिखाई देने लगी थी। कार्यकर्ताओं की कर्मठता, सजगता देख मानो समस्याएँ कहीं मुँह छुपाकर छुप गईं थीं।

इस शिविर की खास विशेषता यह थी कि हर व्यक्ति इसे सफल बनाने में जी-जान से जुटा था। प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार हो गया था और व्यवस्थापकों का सहयोग कर रहा था। आँधी-तूफान इस शिविर में भी आए, पर वे शिविर में विघ्न न डाल सके।

दादा कहते थे कि समवशरण में जब कुबेर जैसे व्यवस्थापक हों तो उपदेश सुनते-सुनते नीचे का आसन बदल जाता है और भव्यों को पता भी नहीं चलता, वैसे ही इस शिविर में भी आसन विघटते रहे, बदलते रहे; पर कार्यक्रम यथावत् चलते रहे। बालवर्ग हो, युवावर्ग हो या वृद्धवर्ग, सभी ने अपनी-अपनी योग्यतानुसार ज्ञानगंगा में डुबकी लगाई।

अधिक क्या कहूँ, दादा का एक रूप हमारी नज़रों से ओझल क्या हुआ, अब तो दादा तो अनेक रूपों में हम सभी को दिव्यदृष्टि से निहार रहे थे। उनका आशीर्वाद हमारे साथ था, भला हम असफल कैसे होते ?

प्रशिक्षण शिविर ज्ञान-वैराग्य दायक

– पण्डित राजेन्द्र जैन, जबलपुर

हम ज्ञान जगाने आए हैं, वैराग्य जगाने आए हैं।
भूल गए अपना स्वभाव, याद दिलाने आए हैं।।

शिक्षण शिविर महोत्सव मंगल, समवशरण सा लगता है।
राग आग में झुलस रहा मन, यहाँ शीतल बरसात मिले।।
यही शिविर जो तिमिर मिटावे, अच्छे दिन अब आए हैं।
वैराग्य जगाने आए हैं, हम ज्ञान जगाने आए हैं।।

धन्य-धन्य गुरुदेव हमारे, शिक्षण शिविर लगाते थे।
धन्य हमारे डॉ. भारिल्ल, रहे सिंचते उसे सदा।।
संजीव गोधा गणधर जैसी, सेवा दे हर्षाएँ हैं।
वैराग्य जगाने आए हैं, हम ज्ञान जगाने आए हैं।।

शिविर को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी

– श्रीमती लता जैन, देवलाली

आदरणीय दादा के जाने के बाद प्रशिक्षण शिविर की कल्पना भी सपना लगती थी, परन्तु आदरणीय छोटी बाई का प्रत्यक्ष सान्निध्य और श्री परमात्मजी व श्री अध्यात्मजी की आत्मविश्वास से भरी प्रसन्न मुद्रा ने शिविर को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

साथ ही पूरी टीम की अथक साधना और सभी के इस संकल्प ने कि शिविर किसी भी तरह कमतर न लगे व समाज को दादा की कमी महसूस न हो पूरे शिविर में जोश भर दिया।

शिविर ने स्वयं को सभी मानकों पर सफल सिद्ध किया है। मैं तो इस टीम का हिस्सा मात्र हूँ और इस सफलता पर बहुत प्रसन्न हूँ।

अकल्पनीय सफलता

– अखिलेश जैन, क्लेक्टर ग्वालियर

ग्वालियर की भरी गर्मी में यह 18 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर **अकल्पनीय सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।** सभी विद्वानों को यूट्यूब पर तो सुना ही था, पर इस शिविर के माध्यम से ग्वालियर में इतने सारे विद्वानों का समागम पहली बार देखा।

टोडरमल स्मारक का जो बुक स्टॉल था, उसमें हर वर्ग के लिए सरल से सरल भाषा और कम से कम कीमत में साहित्य उपलब्ध था।

इस शिविर ने टोडरमल स्मारक और ग्वालियर समाज के मध्य बने सम्बन्धों में एक सेतु का काम किया।

दूसरा अध्याय

– पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर

..... सच कहूँ तो एक क्षण के लिए भी ऐसा नहीं लगा कि दादा हमारे साथ नहीं हैं; क्योंकि सारे आयोजन उनकी शिक्षा-संस्कार के अनुकूल ही संपन्न हुए साथ ही यह भावभासन भी हुआ कि दादा कितने दूरगामी विचारक थे।

संकल्प दिवस के दिन जहाँ एक ओर दादा को अपने बीच न पाकर आंखों में आंसू थे तो दूसरी ओर उनकी रीति-नीतियों का पालन करते हुए तत्त्वज्ञान को आगे बढ़ाने में हमारी कटिबद्धता के बारे में सोचकर सीने में गर्व भी था। दादा के द्वारा थामा हुआ झंडा गिरने की बात तो दूर ही रहो, वह हिला भी नहीं; क्योंकि दादा बहुत ही योग्य और मजबूत टीम तैयार करके गए हैं।

ग्वालियर प्रशिक्षण शिविर की सानंद सफलता पण्डित टोडरमल ट्रस्ट का शंखनाद है और दादा की मधुर स्मृतियों के आंचल में पल्लवित होतीं उनकी रीति-नीतियों का प्रत्यक्ष प्रमाण है; साथ ही तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में उठे ठोस कदम के दूसरे अध्याय का प्रचण्ड प्रारंभ है।

एक अनुपम शिविर

– मनीष जैन, ग्वालियर

शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की जितनी तारीफ की जाए, उतनी कम है। **यह लौकिक और पारलौकिक गतिविधियों को समेटे हुए अनुपम शिविर है।** इस शिविर में क्रमबद्धपर्याय जैसे विषयों का स्पष्टीकरण हुआ। साथ ही पक्षातिक्रांत होने का एवं तत्त्वचिंतन आदि विषयों का बड़े ही रोचक तरीके से वरिष्ठ विद्वानों द्वारा अध्ययन कराया गया। अलौकिक दृष्टि से, जो इस शिविर का मुख्य प्रयोजन है कि जिस तत्त्व को सीख रहे हैं, **उस तत्त्व की धारा को कैसे जन-जन तक, आबाल-गोपाल सभी तक पहुँचायें; इसके लिए प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से पढ़ाने का तरीका सोपानों द्वारा समझाया गया, वह अविस्मरणीय है। इससे हमें अपने विचारों को, तत्त्व के माध्यम से समझाने का तरीका मिल गया एवं वही तत्त्व हमारे माता-पिता, भाई-बहिन, मित्रगण आदि को समझाने का तरीका और बल भी मिल गया.....**

अध्यापकों व विद्वानों ने चुनौती के रूप में स्वीकारा

– निखलेश शास्त्री, दलपतपुर

ग्वालियर प्रशिक्षण शिविर की सफलता का महत्त्वपूर्ण पहलू यह था कि हमारे सभी अध्यापकों एवं युवा विद्वानों ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार किया। **पढ़ाने की विधा में जो नयापन लाने का प्रयास हुआ, उसके सकारात्मक परिणाम सामने आए।** ग्वालियर के मंडल ने हमारी संस्था के मैनेजमेंट का भरपूर लाभ उठाया, दोनों का सामंजस्य गजब का था। **इसकारण यह प्रशिक्षण-शिविर अभूतपूर्व रहा।**

रटाते नहीं भावभासन कराते हैं

– पण्डित संजय सेठी, जयपुर

55वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर ग्वालियर की धरा पर हम सभी के लिए एक अद्भुत छाप छोड़ गया। इस प्रशिक्षण में मुख्यरूप से अध्यात्मप्रकाशजी, परमात्मप्रकाशजी, शांतिकुमारजी पाटील एवं कमलचंद्रजी के मार्गदर्शन में **शिक्षण की अंतर्राष्ट्रीय पद्धति का उपयोग किया गया। जहाँ पर शिक्षक विद्यार्थियों को विषय रटाते नहीं हैं; बल्कि विद्यार्थी स्वयं अपने विषय को रुचिपूर्वक भावभासन करके व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन में उपयोग कैसे लिया जाए, वह सीखते हैं।** जिससे उनके द्वारा ली गई शिक्षा वर्तमान जीवन को आदर्श एवं आनंददायक बनाती है।.....

सदभाव से ज्यादा अभाव में

– पण्डित राजेश शास्त्री, शाहगढ़

55वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर ग्वालियर में आयोजित किया गया। डॉ. भारिल्ल साहब की अनुपस्थिति में लगने वाले ग्वालियर शिविर से पहले संपूर्ण मुमुक्षुसमाज कई तरह के विचारों से, आशंकित था कि शिविर कितना सफल होगा, नहीं होगा।

दादाजी की अनुपस्थिति में शिविर लगेंगे-नहीं लगेंगे, सफल होंगे-नहीं होंगे; इस तरह के संपूर्ण मिथक को समाप्त करते हुए ग्वालियर शिविर तत्त्वज्ञान की प्रभावना के क्षेत्र में झंडे गाड़ते हुए आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सचमुच ग्वालियर जैनसमाज की व कार्यकर्त्ताओं की एकजुटता, समर्पण व साधर्मी वात्सल्य देखकर हृदय गदगद हो गया। तत्त्वज्ञान के प्रेमी जहाँ मिल जाते हैं वहाँ सभी के हृदय खिल जाते हैं।

शिविर के लिए लालायित, उत्साहित और चिन्तित

– रजित जैन शास्त्री, ग्वालियर

....सम्पूर्ण समाज विभिन्न विद्वानों से तत्त्वज्ञान प्राप्त करने को लालायित और उत्साहित तो था ही, पर छोटे दादा की अनुपस्थिति में पहली बार शिविर का आयोजन होने से कुछ चिन्तित भी था; परन्तु आ. परमातमजी के कुशल नेतृत्व और आ. अभयजी भाईसाहब के तत्त्वचिंतन विषय पर हुए व्याख्यानों ने मानो दादा के कुशल रीति-नीति पूरित नेतृत्व और उनके तात्त्विक प्रतिपादन की रिक्तता को भर दिया हो।

शिविर सम्पन्न होने के तुरन्त बाद प्रशिक्षित स्थानीय युवा एवं प्रौढ़ वर्ग ने प्राप्त तत्त्वज्ञान को प्रसारित करने हेतु कार्य करना प्रारम्भ भी कर दिया है, यही शिविर की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

एक ही समय में बालक, युवा एवं वृद्ध सभी वर्गों को मूल तत्त्वज्ञान से जुड़ने के समान अवसर प्रदान करने वाले ऐसे आयोजन वर्तमान और भविष्य दोनों की दरकार है।.....

शिक्षक-प्रशिक्षण का अजुबा - प्रशिक्षण शिविर

– पण्डित रितेश शास्त्री, बाँसवाड़ा

किसी भी शिक्षा शास्त्री की कल्पना से परे है कि 18 दिवस में बालमनोविज्ञान को समझने वाला, दक्ष, कुशल, निष्णात एवं एक जागरूक शिक्षक तैयार हो सकता है, लेकिन यह हकीकत है। और इस हकीकत को सर्वप्रथम कल्पना में, तत्पश्चात् उस कल्पना को निर्देशिका पुस्तक लिखकर साकार रूप देने में और लगभग 60 वर्ष पूर्व प्रॅक्टीकल रूप से प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ कर मूर्त रूप प्रदान करने और वह शिविर का कारवाँ 55 वर्ष की अवस्था में भी चिर युवा है, जिसका श्रेय जाता है डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को।

इस शिविर में जिसके पास जो था, वह संपूर्ण समर्पण भाव से अर्पण के लिए तैयार खड़ा था। स्थानीय ग्वालियर मुमुक्षु मंडल एवं जैनसमाज तन-मन-धन से शिविरार्थियों का स्वागत, सत्कार एवं आवभगत के लिए पलक-पॉवड़े बिछाये तैयार खड़ा था, तो विद्वानों की टीम नये-नये विषयों को सहज, सरल भाषा में प्रस्तुत करने के लिए और शिक्षक-अध्यापक कम समय में कुशल, दक्ष, जागरूक एवं निपुण अध्यापक तैयार करने के लिए कृत संकल्पित थे। वहीं प्रशिक्षणार्थी 6 से 7 घंटों की प्रतिदिन की कक्षाओं में उपस्थिति के बाद प्रवचन सुनने, पाठ-योजनाएँ निर्मित करने में हँसते-खेलते हुए नजर आ रहे थे, तो शिविरार्थी आत्मकल्याण की विशुद्ध भावना से डटे हुए थे।

सर्वश्री परमात्मप्रकाशजी, अध्यात्मप्रकाशजी, शुद्धात्मप्रकाशजी, शांतिजी व पीयूषजी दिन-रात प्राण-पण से शिविर की सफलता के लिए जुटे रहे और प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्राचार्य कमलचंदजी पिड़ावा की वृद्धावस्था तो कहीं दृष्टिगोचर ही नहीं होती थी।

जैनदर्शन की बारीकियाँ सीखीं

– पण्डित निलय शास्त्री, आगरा

55वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर जो कि ग्वालियर में आयोजित हुआ, उसमें ग्वालियर की स्थानीय समाज का अथक परिश्रम एवं समर्पण सराहनीय था। समाज के घर-घर के बच्चों और बहुओं ने प्रशिक्षण में भाग लिया एवं अपने अनुभव भी प्रकट किए, जिससे ज्ञात हुआ कि केवल 18 दिन में ही उन्होंने जैनदर्शन की बारीकियाँ सीखीं।

टोडरमल स्मारक के प्रत्येक पदाधिकारी के द्वारा जो श्रम किया गया, वह वास्तव में सराहनीय है, प्रेरणास्पद है। किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिए जब पूरी टीम एक लक्ष्य और एक पक्ष होकर जुट जाती है तो वह कार्य निश्चित ही सानंद संपन्न होता है। प्रशिक्षण कक्षाओं में भीषण गर्मी के मध्य शान्तिजी, परमात्मजी, अध्यात्मजी एवं कमलजी के कुशल निर्देशन में सभी अध्यापकों ने अपना शत प्रतिशत योगदान देते हुए सभी प्रशिक्षणार्थियों को पूर्णत: प्रशिक्षित किया।

सभी आशंकाओं को निर्मूल करता प्रशिक्षण शिविर

– डॉ. नेमीचंदजी शास्त्री, खतौली

.....इससे पूर्व के 54 शिविरों में दादा का बदस्तूर सानिध्य व कुशल निर्देशन बेशक सफलता का आधार रहा था; परंतु इस वर्ष उनकी अनुपस्थिति में होने वाले इस प्रथम शिविर को पूरे जैनसमाज द्वारा अनेक शंकाओं की निगाहों से देखा जाना स्वाभाविक ही था।

पर सभी वर्गों की शंका-आशंकाओं को निर्मूल करते हुए लगभग 450 से अधिक प्रशिक्षणार्थियों ने तो वीतरागवाणी को जन-जन तक पहुँचाने की विधि को सीखा ही। साथ ही ऑनलाइन लगभग 1500 लोगों ने भी वीतरागी तत्त्वज्ञान का लाभ लिया।

इस शिविर को सफल बनाने के लिए दादा के ही ज्येष्ठ पुत्र श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल के कुशल नेतृत्त्व में उनकी टीम व भूतपूर्व विद्यार्थियों के अध्यापन व मुमुक्षुसमाज के अनेक ज्येष्ठ व श्रेष्ठ विद्वानों, श्रेष्ठीगणों व दानदाताओं के सहयोग ने शिविर के आयोजकों के साहस व संकल्प को साकार करने में भरपूर योगदान दिया।

दादा की अनुपस्थिति में हुए इस प्रथम शिविर की यह सफल परिणति विश्वास दिलाती है कि उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया यह यज्ञ आगे भी इसी प्रकार निरंतर चलते हुए जन-जन के लिए आत्म कल्याणोपयोगी बनता रहेगा।

सीखने सिखाने का शिविर

– पण्डित मनीष शास्त्री कहान, जयपुर

शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर ग्वालियर, सीखने और सिखाने का शिविर था। सिखाने का कार्य तो विगत अनेक वर्षों से कर ही रहा था परंतु सीखने का कार्य पहली बार था। सीखने का अभिप्राय शिक्षण पद्धति में जो नवीन परिवर्तन किए गए थे, उन परिवर्तनों को हमें भी सीखना था।

दादा के वियोग में शिविर की कल्पना करना कठिन और असहज लग रहा था। परन्तु शिविर में दादा की परंपरा की अक्षुणता और निरंतरता ने उस कठिनता को सरलता और सहजता में बदल दिया।

प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक पाठशालाओं ने धूम मचायेंग

– पण्डित संदीप शास्त्री, बाँसवाडा

55वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, ग्वालियर 2023, अद्भुत व अनुपम रहा। मैंने अनुभव किया कि सभी प्रशिक्षणार्थियों में सीखने की अलग ही ललक थी। मानो वे कुछ नया सीखकर देशभर की पाठशालाओं में प्रस्तुत करना चाहते हों।

इस शिविर ने उनको प्रेरित किया कि किसप्रकार से जैन पाठशाला के अध्ययापन को सरल, रोचक एवं जीवनोपयोगी बनाया जाए। मुझे पूरा विश्वास है कि ग्वालियर से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक देशभर की पाठशालाओं में धूम मचायेंगे।

उसी गौरव-गरिमा के साथ

– विनीत शास्त्री, नागपुर

55वाँ शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर ग्वालियर में सम्पन्न हुआ। यह ऐसा पहला प्रशिक्षण शिविर था जो छोटे दादा की अनुपस्थिति में हुआ; लेकिन खास बात यह रही कि शिविर की वही गौरव–गरिमा बरक़रार रही जो दादा के समय में रहती थी। एक केवल तत्त्वज्ञान परोसने को ही सुबह 5 बजे से रात 10.30 बजे तक ऊर्ध्व रखा गया।

श्री परमात्मप्रकाशजी के कुशल नेतृत्व क्षमता एवं श्री अध्यात्मप्रकाशजी की शिक्षण पद्धति के आधुनिक, संशोधित और परिवर्धित सोपान सहित मूल्यांकन को जनमानस के द्वारा सराहा गया।

इस भव्य कार्यक्रम में प्रकृति–प्रदत्त अड़चने भी आईं; लेकिन जयपुर और ग्वालियर की टीम पूरी मुस्तैदी के साथ हर समय खड़ी रही। टोडरमल स्मारक के चिर परिचित कुशल और कर्मठ प्रबंधक पीयूषजी शास्त्री एक जागृत समन्वयक बनकर उभरकर आए।

उपलब्धियों से सराबोर ग्वालियर प्रशिक्षण शिविर

– राकेश जैन शास्त्री, दिल्ली

प्रशिक्षण शिविर में एक वर्ष में पूर्ण किये जाने वाले कोर्स को 18 दिन के लघुतम समय में रोचक शैली से सम्पन्न कराना ये छोटे दादाश्री के अद्भुत, बहु आयामी, स्थायी दृष्टिकोण की सफलता है।

छोटे दादा के विरह से उत्पन्न रिक्तता की पूर्ति तो उनकी प्रत्यक्ष मौजूदगी से ही सम्भव थी, किन्तु अब यह तो अपने हाथ में नहीं है। फिर भी दादाश्री द्वारा तैयार टोडरमल स्मारक की टीम ने उनकी वियुक्तता में भी सफलता का कीर्तिमान स्थापित किया है।

यह ग्वालियर शिविर आगामी वर्षों के लिए अनवरत तत्त्वप्रभावना के प्रतिमान स्थापित करता हुआ सम्पन्न हुआ है।

गोपाचल की धरा पर प्रशिक्षण शिविर

– जितेंद्र राठी शास्त्री, पुणे

मुमुक्षुसमाज निश्चित ही इस शिविर की उपलब्धियों को देखकर हर्षविभोर हो रही हैअ **नियोजन, समर्पण, आदर, आतिथ्य, निष्ठा और वात्सल्य के साथ ज्ञानपिपासु जीवों के लिये ज्ञानप्राप्ति का यह अपूर्व संगम था, एतदर्थ श्री मुकेशजी परिवार, श्री सुनीलजी परिवार और सभी कार्यकर्ताओं का हृदय से अनेकशः अभिनंदन व आभार है।**

अंत में श्री परमात्मप्रकाशजी का कुशल निर्देशन, अध्यात्मप्रकाशजी की जीवनोपयोगी शिक्षण पद्धति, आदरणीय शान्तिजी भाईसाहब की वीतराग–विज्ञानमयी शिक्षा, एक ही समय में दो रथों के प्रबंधन सारथी बने पीयूषजी का सहयोग परिपूर्ण रहा।....

छपते–छपते : दिनांक 15 अगस्त 2023 को श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित अगस्त शिविर के असवर पर अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारणी की बैठक एवं 'वर्तमान संदर्भ में विद्वत्परिषद की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुमुक्षुसमाज ने बनाया कीर्तिस्तंभ की स्थापना का रिकॉर्ड
इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज

सर्वविदित है कहान समयसार संप्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर देशभर में 41 समयसार कीर्तिस्तंभ स्थापित किए गए।

कीर्तिस्तंभों में समयसार की 415 गाथाओं को मार्बल पर उकेरा गया है, यह कीर्तिस्तंभ 7 फीट ऊँचा सफेद मार्बल से बना है।

मुमुक्षुसमाज ने समयसार ग्रंथ पर सर्वाधिक (41) कीर्तिस्तंभ स्थापित कर भारत देश की संस्था **इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड** में रिकॉई दर्ज किया।

उक्त सम्पूर्ण परियोजना का संयोजन श्री विजय बड़जात्या, इंदौर ने किया।

नीमच में भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न

नीमच : यहाँ दिनांक 10–11 जून 2023 को भव्य शिलान्यास समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित देवेन्द्र जैन बिजोलिया के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

इस प्रसंग को श्री विजय बड़जात्या, इन्दौर; पण्डित संजय शास्त्री, जेवर; पण्डित रजनीभाई, हिम्मतनगर; पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर; श्री नागेश जैन, पिड़ावा आदि महानुभावों की उपस्थिति ने भव्यता प्रदान की।

विद्वानों ने पंचाध्यायी ग्रन्थ पर गहन चर्चा

कारंजा (महा.) : यहाँ दिनांक 20 से 22 जून 2023 तक पाण्डे राजमल्लजी द्वारा रचित श्री पंचाध्यायी पर विशेष संगोष्ठी आयोजित हुई।

संगोष्ठी के अन्तर्गत श्री पंचाध्यायी के सन्दर्भ में सत्ता, महासत्ता, अवांतर सत्ता, द्रव्य–गुण–पर्याय, नय–नयाभास आदि विषयों पर विशद एवं गम्भीर चर्चा की गयी। साथ ही विदुषी विजयाताईजी भिसीकर के भी प्रवचनों का लाभ मिला, जिसका आयोजन श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम एवं श्री महावीर ज्ञानोपासना समिति की ओर से किया गया तथा इसके संयोजन का कार्यभार अर्हद् वार्ता ने संभाला।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली; ब्र. हेमचन्द हेम, देवलाली; डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर; डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली; पण्डित अरुण शास्त्री, जयपुर; डॉ. संजय शास्त्री, दौसा; पण्डित जे.पी. दोशी, मुम्बई; पण्डित कमलेश शास्त्री, ग्वालियर; पण्डित राकेश शास्त्री, दिल्ली; पण्डित अरुण मोदी, सागर; पण्डित शिखर जैन, सागर; पण्डित संयम शास्त्री, नागपुर; पण्डित अंकुर शास्त्री, भोपाल; पण्डित शुभम शास्त्री, भोपाल; पण्डित पवित्र शास्त्री, आगरा; विदुषी प्रज्ञा शास्त्री, देवलाली का सानिध्य प्राप्त हुआ। स्थानीय विद्वानों में पण्डित आलोक शास्त्री, पण्डित चिंतामण शास्त्री, पण्डित पंकज शास्त्री एवं पण्डित संयमजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के आयोजक श्री भरतजी भोरे रहे।

02 जुलाई, 2023, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

मंगल आमंत्रण

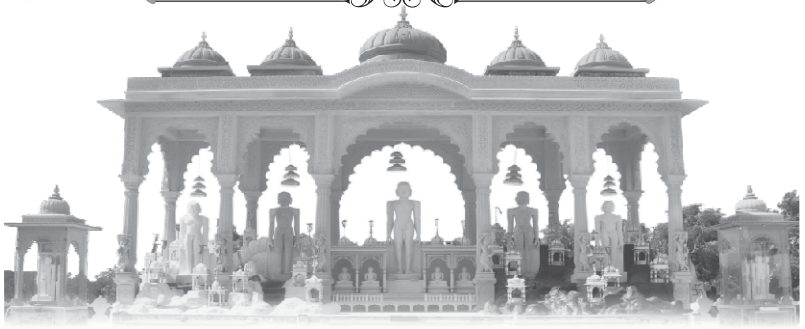

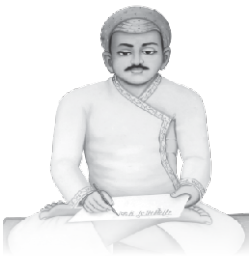

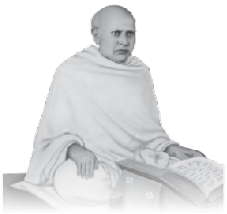

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा
श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में आयोजित

46वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, 13 अगस्त से रविवार, 20 अगस्त, 2023 तक)

विद्वत् समागम

बाल ब्र. अभिनन्दन शास्त्री, खनियांधाना
बाल ब्र. सुमतप्रकाश जैन, खनियांधाना
पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली
पण्डित शैलेशभाई शाह, तलोद
डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर
पण्डित बिपिन शास्त्री, मुम्बई
डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली
डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ
पण्डित कमलचन्द जैन, पिडावा
पण्डित अरुण शास्त्री बण्ड, जयपुर
पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर
डॉ. दीपक शास्त्री वैद्य, जयपुर
पण्डित राजकुमार शास्त्री, उदयपुर
डॉ. प्रवीण शास्त्री, इन्दौर
पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रभावना योग में
- तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रणीत
- परमात्मप्रकाश भारिल्ल व शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल के निर्देशन में
- विद्वानों की काशी जयपुर के आध्यात्मिक वातावरण में आयोजित
- विशेषज्ञ विद्वानों के समागम में
- जैनदर्शन के आध्यात्मिक विषयों से सराबोर
- अध्यात्मजिज्ञासुओं के लिए मंगल अवसर

सम्पर्क सूत्र
8949033694

स्थान
पण्डित टोडरमल स्मारक भवन
ए-4 बापू नगर, जयपुर

निवेदक

सुशीलकुमार गोदिका
अध्यक्ष

परमात्मप्रकाश भारिल्ल
महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
सह-सम्पादक : पीयूष जैन
प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2023

प्रति,